जैठाम न्यायालयक न्याय अबिसवासू भऽ जाए, तरवन तँ लड़ाइ-झंझटक वएह रूप ने पकड़त जे खाइ-पीबैले शहर-बजारक कचहरी रहऽ दियौ आ रगड़ा-रगड़ी समाजमे करी। जँ से नइ करब तँ समुद्रक अमृत थोड़े भेटत। तइले समुद्र मथै पड़त।

307 दफाक मुकदमा निचला कोर्टसँ किछे दिनक पछाइत सी.जी.एम. कोर्टमे चलि गेल। जहिना लोक रोगाएल अछि तहिना परिवार रोगाएल छै, परिवारे किए समाजे रोगा गेल अछि। जखने गाछक जड़िमे गराड़ धरत तखने नसे-नसे डारियो सभकेँ रोगेबे करत किने। कोटो-कचहरी तइसँ किए अबंच रहत। नस-नसमे रोग घुसले अछि, जइसँ जिनगियो बेठेकान भऽ गेल छइ। जैठाम न्यायालयक न्याय अबिसवासू भऽ जाए, तखन तँ लड़ाइ-झंझटक तँ वएह रूप ने पकड़त जे खाइ-पीबैले शहर-बजारक कचहरी रहऽ दियौ आ रगड़ा-रगड़ी समाजमे करी। जँ से नइ करब तँ समुद्रक अमृत थोड़े भेटत। तइले समुद्र मथै पड़त। यएह सभ सोचि केसकेँ बीस बर्ख तक ऐ आशासँ जे पच्चीस-तीस बर्खमे जँ नीचला कोर्टमे अँटकत तँ ऊपरका जाइत-जाइत साठि-सत्तैर बर्ख भऽ जाएत। जिनगीए केतेटा अछि, तखन तँ भेल लड़ाइ-झगड़ा, एक आइटम काज। बाइस बर्खक पछाइत कोर्टसँ केसक फैसला भेल। रोगाएल जेहेन फैसला हेबा चाही सएह भेल। सभकेँ सजा भेल। सभ जेल गेल।





जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

अपन पढ़ैक धार तँ नीक रहल, एहेन नीक रहल जे कोशी-कमला जकाँ अपन पेटकेँ के कहए जे आनो आनक चास-बास धरिया गेल छल जे लिखैक बाट छोड़ि मंचपर बजैक बाट पकड़ा देलक।

लिखबो-ले वौस चाही बजबो-ले वौस चाही। सुवोधनीक मन धारक मोनिक पानि जकाँ नचलैन, नचिते मनमे उठलैन, गाँधीजीक शहादत दिवसपर देल गेल भाषण। गाँधीजी एशिया महादेशक भारत, आ अफ्रिका महादेशक बीच गुलामीक विरोधमे महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फुकलैन। की ओ नइ जनै छला जे गुलामीक केहेन-केहेन जाल अछि। गाँधीजीक ओही विचारकेँ बुझै पाछू अपन समय चलि गेल। एशिया महादेशक सउदी अरब, यमन, ओमान, भूटान लाओस जहिना, तहिना अफ्रिकाक माली, वरकिना, नाइजर, टागो, सेनेगल मनकेँ घेरि मुड़ीकेँ गोंति गोंतिया कहा-बधी करा नेने छेलैन जे गाँधीजीक शहादत दिवसपर पोथीक रूपमे लोकार्पण करब, कहाँ भेल! किए ने भेल?



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

वेद तँ वेद छी, अक्षर ब्रह्म। मुदा वेदोमे भेद तँ अछिए। जँ से नै अछि, तँ एते रंगक वेद आ एते वेदवेत्ता केना भेला कि छैथ?

भेदो उचिते ने, जेहेन देश तेहेन भेष। जेहेन उपारजन तेहेन भोजन, मुदा उपारजनो तँ प्रकृते अनुकूल, तँए जेहेन भोजन तेहेन जिनगी...।

मुदा जखन देश-देशक माटि-पानि, उपजा-वाड़ी रंग-बिरंगक अछि तखन तँ जिनगियो ने सभ रंगक हएत चाहे लाल हुअए कि कारी! आ जखन जिनगी सभ रंगक हएत तँ जीबैक विधो-बेवहार ने सभ रंगक हएत। जखन बीध-बेवहार फर-फराक हएत तखन तँ वेदोमे भेद हेबे करत किने...। पड़ले-पड़ल सुकल भाइक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे जे बात बुझए चाहै छी से तर पड़ि गेल आ आने-आने ऊपर भऽ गेल! तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जइ चीजक खेती करब तइमे तइ चीजकेँ छोड़ि बाँकी- ओ चाहे उपयोगीए वस्तु किए ने हुअए- सभटा घासे भेल किने। बिना ओकरा हटौने जजात अपन अनुकूल नइ ने हएत। ओ तँ तखने अनुकूल भऽ सकैए जखन दोसर ओकर माटिक शक्ति नइ लइ...।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

ओना, तीन मासक दौड़मे, जाबे धरि दर्जन भरि सी.आर.पी.क ड्यूटी रहल, समाजकेँ बहुत लाभ भेल। वारन्टीक पकड़-धकड़ तेते नइ भेल, मुदा समाजक दर्जनो उचक्का फँसि गेल।

जहिना जालमे घोंघा-सितुआ ओंघराइत फँसि जाइए तहिना भेल। सभकेँ अन्दाजमे आएल जे जाबे गामक उचक्का नइ सोझ हएत, ताबे समाज केना सोझ डारि पकड़त। मुदा सोचब, करब आ हएबक बीच तँ किछु-ने-किछु दूरी बीचमे अछिए। अही बीचक फाँकमे भेल ई जे रंग-रंगक घटना फँसल। से दुनू दिससँ फँसल। के केकर शासन करत। लड़की संग घटना फोर्सो एकटा परिवारक संग केलक। तहिना गौओंक बीच भेल। तीन मास बीतैत-बीतैत शासन बदैल गेल।

बहरबैया मालिकक सात कट्ठा घराड़ी खेत। एक गोटे खेत खरीदैक गप केलैन। बेना-बट्टा भऽ गेल। दू फरीकक हिस्साक जमीन। दुनू फरीक बिकरीक गप तँइ कऽ नेने छला। रजिष्ट्रीक डेट बनल एक फरीक रजिष्ट्री ऑफिस पहुँचबे ने केला।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

मने-मन भेल- डायरीसँ ठेकान नै पेब सकै छी। एक तँ ओहुना ओ अधखरूआ होइए, दोसर अपने लिखनाइए छोड़ि देलौं। तखन? हँ! दोसर ठेकान आरो भऽ सकैए। ओ अछि छठिहारीक दूध। मुदा ओहो तँ डुमले पोखैरक पानि भेल! छह दिनक बच्चाकेँ की ठेकान रहतै जे छठिक दूध केहेन होइ छै, भलेँ छठम दिन किए ने ओही दूधपर ठाढ़ भेल रहल हुअए। ओहो बेठेकाने अछि। तखन? हँ, तखन तेसरो अछि- पेटक मल आ जन्मक मल। मुदा ओ तँ प्राण छुटैबेर अपन परिचए दइए...।

ओह! ओहूसँ भाँज नै लगत, ओ तँ भविसक भेल। तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहियासँ अप्पन ठेकान अछि तहीसँ ठेकना ली। मुदा ओहो तँ बेठेकाने अछि। सभ दिन नवके-नवके भेँट होइत गेल, मुदा एते तँ ऐछे जे जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककेँ ओते पलखैत छै, तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तखन ओहन शीलापटकेँ राखबे केते नीक हएत?

मुदा लगले सुकल भाइक मन घुरि गेलैन। घुरि ई गेलैन- भाइ! सबहक ई दुनियाँ छी, सबहक दिन राति छी, तैसंग कि लोको-वेद नइ छी। मुदा ओ तँ तखने ने हएत जखन लोक-वेदकेँ खोद-बेद करैत रहब। ओना, खोदो-बेद असान थोड़े अछि। खोदो जहिना पहाड़सँ समुद्र धरि अछि तहिना ने वेदो अछि। पहाड़क पाथर खुनी आकि गावीस माटि खुनी, घी जकाँ पीघलैत पाथर खुनी आकि झहरैत झरना-बहैत धार खुनी, चाहे ओइसँ बनल समतल भूमि–गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान–खुनी आकि सभ धारक संगोरल गंगासागरक घाट खुनी, बंगालक खाड़ी खुनी आकि प्रशान्त महासमुद्र खुनी। केते खुनब..! केते खोदब..!



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

दिन भरि तँ दर्जन भरि सिपाहीक आगू हजारो सिपाही मर्द-औरत समाजमे ठाढ़ अछि, मुदा राति तँ राति छी। तँए छबो गोटे गामसँ एक किलोमीटर हटि गामेक गाछीमे बिसवासक संग राति बितबै छल।

समाजमे संक्रमणक स्थिति पनपए लगल। गामक गाड़ीक चक्का केमहर मुहेँ घुमि चलत? जेहेन चलौनिहार रहत तेम्हरे मुहेँ ने चलत। राघोपुर गामक एक दिनक एकटा केसक मुकदमाकेँ के कहए जे सत-सत, अठ-अठटा केस हुअ लगल। भरि दिन थाना राघोपुरक लोकसँ झँपाएल रहैत, गामोमे तहिना दू-चारि-पाँच ठाम पटका-पटकी, थापर-मुक्का आ लाठी-फराठी चलिये जाए। बेवस्थाक यएह धुरी छी। जे बेवस्था घँसाइत-घँसाइत एते घँसा गेल अछि जे डेग भरि आगू मुहेँ ससरब कठिन भऽ गेल छै, तेनामे बदलाव छोड़ि दोसर रस्ते की छइ। एक दर्जन सी.आर.पी.क चौबीस घन्टाक ड्यूटी प्रशासनिक अफसरक संग गाममे भऽ गेल। मुकदमाक धारो दू-दिसिया भऽ गेल। दू ग्रुपक बीचमे एहेन स्थिति बनौल गेल जे एक दिस जँ मच्छरो ने मरैत तेकरो बदला मर्डर केस होइत, तँ दोसर दिस हथियारसँ कपारो कटल रहैत तँ ओकरा लाठीए बना देल जाइ छल, स्थिति भयंकर बनऽ लगल। विस्फोटक बनऽ लगल। न्यायालयक प्रति सुबल सबहक बिसवास बढ़ल। थानाक वहिष्कार ऐ शर्तपर केलक जे आगूक कारवाईमे थनोक स्टाफकेँ लपटौल जाए। जे बेवहारिक रूपमे तँइ भेल। छबो संगीक संग सुबल मनमे ठानि लेलक जे गाम नइ छोड़ब, गाम छोड़ब पाछू हटब भेल, से नइ हटब।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

थानासँ कोनो जब्त वस्तुकेँ छोड़बैमे महीनोक चक्कर लगबए पड़ै छइ।

एक तँ पुलिस प्रशासन अपने लोभे परमोशन-ले लोभाएल जे जाधैर जी-जान लगा काज नइ करब ताधैर खरकाह केना बनब। जखने खरकाह बनब तखने ने अवसर हाथ लगत। न्यायालयमे मुकदमा पहुँचते पुलिसक सिरचढ़ भेल। साते दिनक भीतर मारनिहार कोर्टमे हाजिर भेल। ऐ खियालसँ जे औवेल मुदालह छी जिला न्यायालयसँ जमानत हेबे करतै, पछाइत बाँकी मुदालहक ओही आधारपर जमानत भऽ जाएत। मुदा पुलिसक कारवाइ एते तेज भेल जे सातमे दिन मुदालहक घरमे जब्ती-कुर्की भऽ गेल। सुबलक घरक केबाड़-चौकी आदि जे जब्त भेलैन से तँ भेबे कएल जे खेतीक दमकल, जे सिंचाइक साधन छी, ओहो जब्त भेल। जे दू सालक पछाइत आपस भेल। दू साल लगैक कारण भेल जे मुकदमाक सघनता। एक-ने-एक वारन्ट बारहो मासक रहबे करै, जे से थानाक रस्ता सुबलक बन्न रहल।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल... तैठाम देखनिहारोक तँ किछु दायित्व बनिते अछि..!



अपन पितापर सँ नजैर हटि सुवोधनीक राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधीपर गेलैन। जहिना सिनेमाक उन्टा रील नचैत तहिना गाँधी बाबा सुवोधनीक मनमे नचला। गाँधी बाबा अपन लीलसा पूरा कऽ लेलैन। हुनक लिलसा रहैन जे शहीद होइ, जे भेलैन। मुदा हुनके मंचपर अपन कएल संकल्प केना राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया रहल अछि..?

देशक सटले सीमानक कातक देश भूटान अछि, जैठाम रेलगाड़ी नसीव नइ भेल। छियालीस हजार छह साए वर्ग किलोमीटरमे पसरल देशक पनरह-सोलह लाख देशवासीक भाग्य निर्माण, तहिना सउदी अरब जे भूटान जकाँ सटल नहि मुदा महादेशक दूरियो नहि, सउदी अरब, यमन, ओमान लाओसटा नहि अफ्रिकाक माली जे बारह लाख चालीस हजार एक साए बियालीस वर्ग-किलोमीटरमे पसरल देशक अठहत्तैर लाख लोकक जिनगी, जइमे अदहासँ बेसी जमीन मरूभूमिये अछि, अदहामे सहेल सवाना घास उपजैए, तहिना बरकिना जे दू लाख चौहत्तैर हजार एक साए बाइस वर्ग किलोमीटर जमीनमे पसरल सरसैठ-अरसैठ लाख लोक ओहने ठाम ने अछि जैठाम एक दिस सहारा मरूभूमिसँ गुजरैत सर्द हवा जीवन-मरणकेँ सदिकाल झुलबैत रहैए। मुदा तैयो गिनीक मानसूनी हवा जीवनो तँ दइते छइ। तहिना नाइजर, टोगो इत्यादि-इत्यादिक अछिए। 'इत्यादि-इत्यादि' सुवोधनीक मनमे उठिते रहैन तखने सासु दरबज्जापर सँ आँगन आबि आदेश दैत कहलखिन– "कनियाँ, बुड़हाकेँ अबै बेर भऽ गेलैन, तँए पहिनेसँ अपन ओरियान-बात कऽ लिअ।"

सुवोधनियोँकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अखन तँ अँगने नहि दरबज्जोक मालिक साउसे छैथ, बजली– "अखनो बुड़हे सोहाइ छैन मुदा चारि बर्खक पोती नइ सोहाइ छैन।"

पछड़ैत कामिनी कनी पाछू घुसकैत बजली– "बुड़हा कि कम सियाखी छैथ अपनो गुप-चुप खेनहि-पीनहि हेता आ पोतियोकेँ खियौनहि हेता की।"

एक संग दुनू- सासु-पुतोहु-क आँखि, कान, विचार आ मुँह सम बनैत ठहाका मारि आत्मसात करए लगल।





जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जहिना दूध-पिण्ड होइए तहिना पानि-पिण्डसँ लऽ कऽ भक्खो, बगिया धरि होइते अछि...।

..बगियो की वगिया छी, रंग-रंगक बगिया अछि, जेते लोक तेते बगिया ने अछि। कियो बगूरक गाछ रोपि बगुरवगिया बनबैए तँ कियो फूलक गाछ रोपि फूलवगिया लगबैए तँ कियो फलवगिया लगबैए। मुदा तँए कि ईहो सोझ-साझ अछि। जँ तीनियेँटा रहैत माने बगूर, फूल, फल- तैयो नीक रहैत। सेहो ने अछि, घोदा-घोदे तीनू अछि। जहिना बगूरमे काँट तहिना तहूसँ मोटगर काँट बेलमे आ टाभ नेबोमे अछि। फूल-पात जहिना बगूरमे तहिना पातो आ फूलो सैनीमे अछि, भलेँ बगूरक लस्सा आकि टुस्सा कहै जे तोरासँ नीक छी, मुदा काँट तँ नमहर ऐछे! तइसँ नीक ने सैनी, जेकर काँट छोट छइ। तहिना ने फूलोक अछि जे एकटा धरतीपर फुलाइए तँ दोसर अकासोमे फुलाइते अछि आ तहिना ने फलोक अछि जे एकटा खेने पेट भरैए तँ दोसर पेनौं तँ मन खुशियाइते अछि..!

ज्योतिकेँ घरसँ निकलैमे पनरह मिनट समय बाँकी अछि, सुवोधनीक सिरे कोनो काज पछुआएलो नहियेँ छैन, तइसँ मनमे खुशी छैन्हे। देवचन अपने कनी पछुआएल छैथ, ओना, समैयक हिसाबे ओहो नहियेँ पछुआएल छला, धोती-कुर्ता पहीरि नेने छैथ, चद्दैर आ जूता खाली ऊपर-निच्चाँ ओढ़ब-पहीरब पछुआएल छैन। ज्योतिक ज्योतिमे अपन ज्योति मिलैबते सुवोधनीक मन बिहुसल, बिहुसिते बकार फुटल–

"की महाभारतक अर्जुन जकाँ अपन लक्ष साधि सकलौं। मनमे की रोपि जिनगी जीबैक सोचने छेलौं आ की भोगि रहल छी! आकि विचार हेरा गेल? नइ विचार हारि गेल। हारबो ने कएल, वौआ गेल!"

'विचार हेरा गेल आकि हारि गेल' ऐठाम आबि सुवोधनीक बकार बन्न भऽ गेलैन। बन्न होइक कारण भेलैन एक संग मोती-झाबा फूल जकाँ एकेबेर विचारक घोंदे फुला गेलैन। विचार हेरा गेल, कि हारि गेल, हरण भऽ गेल आकि दहन भऽ वौआ गेल...! सुवोधनी अकवका गेली। तैबीच देवचन दरबज्जेपर सँ चिल्होरि जकाँ टाँहि देलखिन–

"ज्योति ई इ इ..!"



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ हटल रहैत अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं।

बच्चा रही मन खाली रहए असथिरसँ मनमे पइस गेल। मन बेसी भरलो ने रहए जे उमटाम होइत। खाली रहए घोरि-घोरि पीबए लगलौं। अखनो मोन अछि। मुदा मोनेटा अछि! मोनेटा किए ने रहत? जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ तँ हटल रहिते अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं। एकर माने ई नइ ने भेल जे सटल नै रहलौं। हँ! मनसँ सटल रहलौं कर्मसँ हटल रहलौं, तेतबे ने भेल? आ तेतबे किए भेल, जनकपुरक जनक बाबाक संकल्पित धनुष उठबैक कुबत नै भेल, सएह ने। अयोध्यासँ सजल आएल बरियाती जनकपुरमे नै हेराएल से कि नै बुझल अछि। बुझले अछि। तँए कि दौजी बरियाती रहैथ सेहो ने। मुड़हन रहैथ, जे जनकपुर आबि ने धोखा खेलैन? जँ नइ खेने रहितैथ तँ डोमक घरकेँ किए जनकक सीता बिआहक बरियातीक बास-स्थल बुझितैथ? ओ की कोनो अयोध्यासँ लऽ कऽ आएल रहैथ आकि जनकपुरेक सज-सजिया, हेल-मेल आ विधि-बेवहार देख बुझलैन। जँ बुझल रहितैन तँ...।

भरिसक हुनका मनमे ई तँ ने भेलैन जे बेटा जन्मसँ लऽ कऽ पिण्डदान तकक हकदार अछि, गारि पढ़ियो कऽ आकि सुनियोँ कऽ, बेटा सबदिना भेल, जबकि बेटी जनगीक एक कालखण्डक। माने बिआहसँ पूर्ब धरिक मात्र!

तहूमे समाजो एहेन बहुरंगी अछि जे कोनो विचारकेँ बुझैए ने चाहैत। कन्याँगत अपना कन्याँकेँ जेते बेसी पढ़ा-लिखा नीक मनुख बना दुनियाँक रंगमंचपर अबै जोकर बना संगबे देथिन तँ संगबैयेक कोनो ठेकान नहि! एक तँ अपन जिनगीकेँ काटि-छाँटि नीक अध्ययनक बेवस्था बेटीकेँ करब पछाइत जखन संगी तकैले जाएब तँ जेते सेवा बेटीक केने छिऐ सभ पानिमे जा कहत जे बाबू अहाँक ई दोख नइ जे हमरा पढ़ेलौं, दोख ई जे समाज बेटी-जातिकेँ विद्यासँ वंचित रखि अपन बुधि-विवेक जगै ने देलकै। जँ जागऽ देल जाइतै तँ रूपक संगी गुणो होइतै, मुदा से कहाँ अछि। केतौ रंग-बेदरंग करैत तँ केतौ अर्थ वेदरंग करैत समाजेकेँ बहुरंगी बेदरंग बना देने अछि। जँ कन्याँकेँ घरसँ निकालि पढ़ऽ देबैन तँ पर्दाक पाठ पढ़ा अनुचित कहल जाइ छै, तँ केतौ संवेदनशीलाकेँ कठोरशीलामे जोति जिनगीक भार कन्हापर लटका देल जाइ छइ। हमर संवेदनशीलताकेँ पिता जानि कऽ जब्बह केलैन आकि कोनो वाध्यता छेलैन। बीचमे बाजब सुवोधनीकेँ उचितो तँ नहियेँ कहल जा सकै छइ। अभिभावक किछु छैथ तँ हमरासँ बेसी अनुभवी छैथे, मुदा तँए कि ओहो जानि कऽ गरदैनमे छुरी चलौने हेता? केना कहबैन, जनमदाता छैथ।

मुदा हमर संवेदनकेँ ओ तखन आँखिक सोझक ताखपर रखि विचार केलैन जखन लेन-देनमे प्रोफेसर पति सुवोधनीक संगी बनि जाइ तँ की हर्ज। समाजोक बीच लोक-लाज तँ बँचल रहत। प्रोफेसर माए-बापक बेटी, प्रोफेसर पतिक संग रहत तँ कि अपना जिनगी सदृश सुवोधनीकेँ नहि भेटतै, जरूर भेटतै...।





जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

परिवारक गारजनी साठि बर्खक देवचन अपने दुनू परानी हाथमे रखने छैथ मुदा अपना सन पत्नी नहि छैन। दुनूक दू गति-मति तथापि पति-पत्नीक बीच जिनगी।

पत्नी- कामिनी- परेखी तँए काजसँ परिवारकेँ अँकैत। अपन दुनू परानीक काज कामिनीक मनकेँ खुशी रखनहि छैन। किए ने रहतैन, गाममे दुइए गोरे प्रोफेसर बनला, तइमे एकटा तँ अपने बेटा छैथ। बेटा- रूपचन- गामसँ हटि पनरह किलो मीटरपर कौलेजक प्रोफेसर छथिन। मोटर साइकिलसँ अबै-जाइ छैथ। ओना, दुनू गौँआँ ओही कौलेजमे काज करै छैथ मुदा दुनू दू टोलोक आ दू जातियोक। तँए परिवारिक जिनगीमे अन्तर सेहो छैन। दुनूक पत्नियोँ बी.ए. पास मुदा सुवोधनी घरेमे घुरियाएल छैथ, जखन कि सरोजनी हाइ स्कूलक शिक्षिका छैथ। नोकरीक पाछू सेहो दू कारण, सरोजनीक परिवार निच्चाँसँ उठैत तँए नोकरीकेँ जीविकोपार्जनक साधन बुझि करैत, मुदा सुवोधनीक सम्पन्न परिवार, तँए महिलाक बीच नोकरी-चाकरीकेँ निकृष्ट नजैरसँ देख निषिध बुझल जाइत अछि। एक तँ ओहुना नोकरी-चाकरी हेय छीहे। एक तँ अपन सम्पन्न परिवार कामिनीक तैपर बेटोकेँ नीक कमाइयो आ प्रतिष्ठो तँ छैन्हे। ओना, ज्योतिकेँ विद्यालयमे प्रवेश जहिना सुवोधनीक मनमे नचैत तहिना कामिनियोँक मनमे, मुदा दुनूक दू-दिशाह नाच छेलैन। कामिनीक मनमे नचैत जे अपना बेटी नइ रहने परिवारमे विद्याक प्रवेश तँ पुतोहुए-जनीसँ भेल, मुदा अप्पन परिवारक चमकी ज्योतिमे चमकैत देखबे केलैन। अपने कामिनीकेँ एको अक्षरक बोध नहि। पोतीक संग पतिकेँ विद्यालय गेने दरबज्जा खाली भइये गेलैन, जे कामिनीकेँ पसिन्न नहि तँए आँगन छोड़ि दरबज्जे पकैड़ लेलैन। असगरे सुवोधनी आँगनक पुबरिया घरक ओसारक चौकीपर देवाल लगल ओंगठल, मने-मन अपन माता-पितापर नजैर देलैन। की जानि माता-पिता पढ़ौलैन, आ की पाबि रहल छी..!

‘नीन टुटैपर अछि आकि अखन रहैबला काँच अछि?’

सभ बुझिते छी जे जखन एक्के अबाजे नीन टुटैए तखन ओ टुटैये-टुटैपर भेल आ जखन दू-चारि हाके वा हकवाहिसँ नीन टुटै, ओ भेल काँचोमे खिंचा काँच। कहैले ते ईहो कहल जाइए जे केकरो नीन मोट होइ छै आ केकरो पातर। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब ईहो छैन जे जगलो रही आ जँ कियो बाहरसँ नाम धऽ कऽ सोर पाड़ए तँ एक्के बेरमे उतारा नइ दिऐ। ओ भूतो-प्रेत रहैए आ मलो-मलेछ रहिते अछि। ओना, सियनगर चोरो नइ रहैए सेहो बात नहियेँ अछि। गुँहचोरा सिनकट्टा ने पछुआरमे सीन काटि घर पैसि घरक समान चोरा लइए मुदा सियनगर चोर तँ से नइ करत। ओ तँ यएह ने करत जे एक दिस पूजी विहीन लोक जे मिथिला सन धरतियो आ माटियो-पानिकेँ–जे दुनियाँमे सभसँ नीक अछि–छोड़ैले तैयार अही दुआरे अछि जे पूजी नइ अछि जे गुजर चलत आ दोसर दिस जे किछु जीवनक मुख्य अंग अछि ओकरा कपैट-छपैट असली-नकली नहि बुझि एजेन्टक भाँजमे पड़ि अपन पाइक संग अपन जिनगी सम्हारैक बाट छोड़ि, सभ किछु ओकरे सभकेँ दइए जेकर ओ नोकरी करैए। एहने-एहने जाल-फाँस लगौनिहारे ने सियनगर चोर भेल।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन। नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन। करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

'एहेन अहाँ काबिले किए छी जे बुढ़िया-फुसि केसमे फँसल छी?' मुदा से बात नहि अछि अपनो इच्छा अछिए जे जेते जल्दी सम्भव हुअए तेते जल्दी कोर्टसँ फारकती ली मुदा से कोर्टो बुझए तखन ने। तहूमे बुढ़िया-फुसि केस जे तीस साल पुरान अछि। बुढ़िया-फुसि केस ऐ दुआरे कहलौं जे एकटा जमीनक–माने तीन कट्ठा जमीन अछि जइमे घर-दुआरसँ बाड़ी-झाड़ी धरि अछि–रगड़ाक-झगड़ा अछि। दखल-दिहानीक बात अछि। दुनू पक्ष गामसँ बहरा बंगलोरमे नोकरियो करैए आ ओत्तै घर-दुआर सेहो बना लेलक। जहिया गाममे छल तहिया विवाद भेल, मुदा आब तँ दुनू अपने छोड़ि बंगलोर चलि गेल आ तैयो कहैए हमरा दखलमे अछि। ओइ बाड़ी-झाड़ीमे फुलबारियो लगौने छी आ तीमनो-तरकारी उपजबै छी। से दुनू कहैए।



जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

**जे मनुख केलक-धेलक किछु ने आ खाइत-पीबैत,
सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता लेलक
वएह जिनगी ने रीब-रीबाएले रहि गेल।**

जिनगी तँ ओ ने भेल जे अपन भरण-पोषण करैत किछु आगू धरि डेग उठबैत चलए। ओना डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। जेना एक भेल आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीचमे तेसरो तँ ऐछे जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछू दिस ससरल बीचमे ठमकल चलैत रहल। ओना, आगू दिस डेग बढ़ाएब आकि पाछू दिस ससरबक कारण अपन-अपन सेहो अछि, एके कारण दुनूक नहि अछि। आगू दिस बढ़ैक जहिना दुनू कारण अछि तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दूटा कारण तँ अछिए। माने ई जे जहिना आगू दिस उचित डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन डेग जइमे अपना संग परिवारो-समाजक मंगल कामना निहित अछि आ दोसर अछि- जइमे केकरो मंगल कामना नहि भऽ अमंगले भेल। तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दू कारण अछिए। पहिल भेल बिना किछु केने-धेने ठाढ़ छी आ समए निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल मुँह तकैत रहलौं। तहिना दोसर कारण ईहो तँ ऐछे जे समैक संग चलैमे पानि-पाथर आ बिहाड़िक एतेक चोट पड़ल जे लाखो चेष्टा केला पछाइतो जिनगीक डेग पाछूए मुहेँ घुसैक गेल। माने ई जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ साधने छीना गेल आ समैक थपेर ओकरा थोपरा कऽ निच्चाँ उतारि देलक...।

"कृष्णदेव भाय ऐठाम आने साल जकाँ लछमीपूजा छिऐन, हकार छह। पहिल साँझक पूजा छी, तँए समयपर पहुँचैले अखन बेसी गप-सप्प नहि करह। तोंहू तैयार हुअ ग आ हमहूँ तैयार होइ छी। ओत्तै निचेनसँ गप-सप्प करब।"

ओना, उदयलाल मजकिया लोक अछि, तँए ओकरो अपन भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन-सँ-कठिन आ गम्भीर-सँ-गम्भीर विचारकेँ मजाक-मजाकमे उड़ाइयो दइए आ पुराइयो तँ दइते अछि। उदयलाल अगुताएलेमे बाजल- "परसादमे पाने-मखानटा बँटता आकि नवको किछु बँटता?"

उदयलालक बात सुनि नहलापर दहला फेकब वा बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुपे रहलौं। हमर चुपी देख आकि अपन मनमे उदयलालकेँ कोनो उद्गार रहै से तँ वएह जानए, मुदा उदयलाल फेर बाजल-

"भाय साहैब, पग-पग पोखैरकेँ जहिना कमला-कोसी खेलक आ पान-मखानकेँ परवासी भाय लोकैन खेलैन तहिना आब एकरा किताबे-कैसेटमे रहऽ दियौ।"

मनमे भेल जे बाजी- 'किताबो पढ़निहार कि आब अछि, आब तँ कैसेटसँ बेसी लोक पढ़ैए। जइसँ एते तँ लाभ भेबे कएल जे मिथिलाक शब्दमे अंग्रेजीक बाढ़ि एने शब्दकोश बढ़बे कएल अछि।'





जगदीश प्रसाद मण्डल : 1947

गाम : बेरमा (मधुबनी)

जीविकोपार्जन : कृषि (तरकारी खेती)

रूचि : 2001 इस्वी तक समाज सेवा, पछाइत साहित्य लेखन।

नाटक, एकांकी, गीत, काव्य, कथा, उपन्यास इत्यादि

साहित्यक मौलिक विधामे अनवरत लेखन।

करीब 100 पोथीक लेखन/प्रकाशन

साँझक आगमन होइते गोसाँइ स्थानसँ (गोसाँइ आगू) सँ लऽ कऽ अपन घर-ओसार, आँगन-दरबज्जा सहित माल-जालक घर, थैर, जल-जलाशय आ धार-धारा होइत समुद्रक घाटपर सेहो दीप जरत। सूर्यास्त होइपर आबि गेल। ओना, श्रम करैक शक्ति सेहो शरीरमे शेष छल आ जिनगीक अग्रिम क्रिया सेहो शेष छलहे। क्रियाक सरदर नियम यहए ने अछि जे एक काजक पछाइत दोसर काज रोपी। तँए कटबी नियम नहि अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। ओहो तँ अछिए जे काजक सघनताक बीचक जे जिनगी अछि, ओइमे समयानुकूल आ आवश्यकतानुकूल घटबी-बढ़बी करए पड़ैए। मुदा ऐठाम ने घटबीक प्रश्न अछि आ ने बढ़बीक, प्रश्न अछि जिनगीकेँ सुचारू ढंगसँ संचालित करैक, जइसँ समयपर दीपो जरा सकी आ पाबैन सेहो मना सकी।